ज्ञान शान्ति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम १९९७, क्रमांक ३ के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केंद्र

विवरणिका – 2011-12

महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केंद्र
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पो. – मानस मंदिर, गांधी हिल्स, वर्धा – 442 001 (महाराष्ट्र)
फोन : (07152) 247146, फैक्स : (07152) 247146
ई-मेल : director.de@hindivishwa.org, www.hindivishwa.org

अकादमिक कैलेंडर

नामांकन सूची जारी करना	पाठ्यसामग्री, सत्रीय कार्य, परीक्षा फार्म, एवं परिचय पत्र प्रेषित करने की तिथि	सत्रीय कार्य, परीक्षा फार्म, दूरस्थ शिक्षा केंद्र में जमा कराने की अंतिम तिथि	सत्रांत परीक्षा	परीक्षा परिणाम की घोषणा
20 अक्टूबर, 2011	31 दिसम्बर, 2011	31 मार्च, 2012	15-30 जुलाई, 2012	31 अगस्त, 2012

प्रवेश हेतु अंतिम तिथि

आवेदन पत्रों को दूरस्थ शिक्षा केंद्र में जमा कराने हेतु निम्नलिखित तिथियाँ निर्धारित हैं –

अ) बिना विलंब शुल्क 30 सितम्बर, 2011

आ) विलंब शुल्क रु. 300/- सहित 31 अक्टूबर, 2011

(**विवरणिका शुल्क** – स्वयं लेने पर रु. 100 तथा डाक द्वारा मंगवाने पर रु. 150)

अनुक्रम पृष्ठ संख्या

- कुलपति संदेश - 5
- निदेशक वक्तव्य - 6
- विश्वविद्यालय : एक परिचय - 7
- संचालित पाठ्यक्रम - 9
- एम. ए. ग्राम विकास - 9
- एम. ए. हिंदी - 10
- एम. ए. समाजकार्य - 11
- पत्रकारिता (जनसंचार) में स्नातकोत्तर (एम. जे. एम. सी.) - 12
- पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम. लिब.) - 13
- पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक (बी. लिब.) - 14
- पत्रकारिता (जनसंचार) में स्नातक (बी. जे. एम. सी.) - 15
- अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा - 16
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रबंधन एवं फिल्म प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा - 17
- आपदा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा - 18
- पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा - 19
- ग्राम विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा - 20
- हिन्दी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा - 21
- स्त्री सशक्तिकरण एवं विकास में डिप्लोमा - 22
- पर्यटन अध्ययन में डिप्लोमा - 23
- सामान्य जानकारी - 24
- विश्वविद्यालय द्वारा संचालित नियमित पाठ्यक्रम - 30
- विभागीय आयोजन - 31

कुलाध्यक्ष एवं भारत की राष्ट्रपति

मा. श्रीमती प्रतिभा पाटिल

कुलाधिपति

प्रो. नामवर सिंह

प्रति कुलपति एवं निदेशक

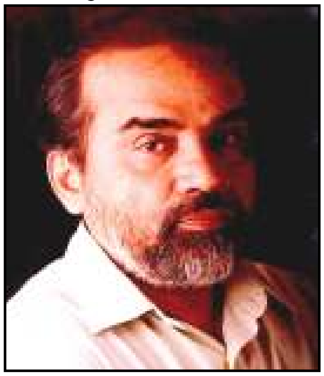

प्रो. ए. अरविंदाक्षन

कुलपति

श्री विभूति नारायण राय

विभागीय परिदृश्य

अकादमिक सदस्य

नाम	पदनाम
१. प्रो. ए. अरविंदाक्षन	- निदेशक/प्रति कुलपति
२. प्रो. संतोष कुमार भदौरिया	- प्रोफेसर
३. श्री शंभू जोशी	- सहायक प्रोफेसर
४. श्री अमित राय	- सहायक प्रोफेसर
५. श्री अमरेन्द्र कुमार शर्मा	- सहायक प्रोफेसर
६. श्री संदीप मधुकर सपकाले	- सहायक प्रोफेसर
७. श्री शैलेश मरजी कदम	- सहायक प्रोफेसर

प्रशासनिक सदस्य

नाम	पदनाम
१. डॉ. ललित किशोर शुक्ल	- क्षेत्रीय निदेशक
२. डॉ. मल्लसर्ज एम. मंगोड़ी	- क्षेत्रीय निदेशक
३. श्री सुशील बी. पखीड़े	- सहायक कुलसचिव
४. श्री शंभू दत्त सती	- सहायक
५. सुश्री रोहिणी उमाटे	- निम्न श्रेणी लिपिक
६. श्री राम कुमार कनोरिया	- भृत्य

कुलपति संदेश

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे सबसे महत्वपूर्ण भावना हिंदी को अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने और ज्ञान के विभिन्न अनुशासनों को हिंदी के माध्यम से एक बड़े समुदाय तक पहुँचाने की रही है । विश्वविद्यालय परम्परागत पाठ्यक्रमों से हटकर नये पाठ्यक्रम चलाने का प्रयत्न कर रहा है ।

निजी रूप से मेरी मान्यता है कि विश्वविद्यालय ऐसा फोरम होना चाहिए जहाँ विविध विचारों के लिए ज़मीन तैयार हो । इसके अंतर्गत दूसरों के विचारों के लिए सम्मान की भावना हो तथा प्रश्नाकुलता की पर्याप्त संभावनाएँ विद्यमान हों। संक्षेप में कहें तो विश्वविद्यालय ऐसे क्षेत्र के रूप में विकसित होना चाहिए जहाँ न सिर्फ असहमति के लिए जगह हो बल्कि उसे तरजीह भी दी जाए । मैं कोशिश करूँगा कि यह विश्वविद्यालय एक ऐसे संस्थान के रूप में विकसित हो जहाँ इस महान राष्ट्र की विविधता परिलक्षित हो सके चाहे वह नस्ल के आधार पर हो या भाषा, धर्म, जाति एवं जेंडर के रूप में । यह विश्वविद्यालय हिंदी को इस रूप में विकसित करने के लिए प्रयासरत है जहाँ इस विविधता को संरक्षित किया जा सके तथा उदार, धर्मनिरपेक्ष एवं आधुनिक विश्वदृष्टि वाला हिंदी राष्ट्र परिलक्षित हो ।

इसी दृष्टिकोण को साकार रूप प्रदान करने तथा शिक्षा का लोकतंत्रीकरण करने हेतु विश्वविद्यालय में महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केंद्र की स्थापना की गई । अपनी स्थापना से ही महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केंद्र अपने ध्येय *शिक्षा जन-जन के द्वार* को चरितार्थ करने हेतु प्रयासरत है । केंद्र हिंदी भाषा को माध्यम बनाकर प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुवाद एवं निर्वचन, अहिंसा एवं शांति-अध्ययन, स्त्री-अध्ययन, दलित एवं जनजातीय अध्ययन जैसे अंतरानुशासनिक विषयों में शिक्षण, मौलिक सोच एवं लेखन को प्रोत्साहित करता है । हिंदी में मौलिक एवं वैकल्पिक सोच हेतु प्रतिबद्ध विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा केंद्र प्रयास करेगा कि एक ओर अनुसंधान द्वारा हिंदी एवं विभिन्न अंतरानुशासनिक विषयों में मौलिक सृजन को बढ़ावा दे, साथ ही दूसरी ओर हिंदी भाषा के माध्यम से रोज़गारोन्मुखी पाठ्यक्रमों को आम जन तक पहुँचा सके । पाठ्यक्रम द्वारा विद्यार्थी समाज में विद्यमान समस्याओं के प्रति गहन आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करे और उनके सृजनात्मक समाधान के लिए भी प्रयासरत हो ।

इस वर्ष हमने दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत कई नये पाठ्यक्रमों की योजना बनाई है । विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम को पिछले वर्षों में जिस तरह की लोकप्रियता प्राप्त हुई है, उसे देखते हुए इस बात में कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि इन पाठ्यक्रमों को भी विद्यार्थियों का सहयोग प्राप्त होगा । इस वर्ष विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के कुछ नये केंद्र भी स्थापित करने का प्रयास कर रहा है, जहाँ से इन पाठ्यक्रमों को सुचारू रूप से संचालित किया जा सकेगा ।

मैं दूरस्थ शिक्षा केंद्र के समस्त सदस्यों को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ कि सभी इस केंद्र के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे ।

विभूति नारायण राय

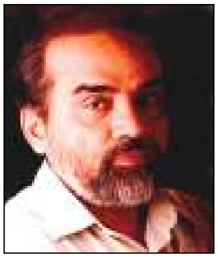

निदेशक वक्तव्य

दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में स्वीकृति मिल चुकी है। स्वतंत्रता के इतने वर्षों पश्चात भी देश की युवा पीढ़ी का अधिकांश भाग उच्च शिक्षा में अपनी भागीदारी नहीं कर पा रहा है । भारत में उच्च शिक्षा के बड़े सांस्थानिक ढाँचे के बावजूद भी युवा पीढ़ी का उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात 2007 में मात्र 10% था । जिसे ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में वर्ष 2011-12 तक 15% तक लाए जाने का अनुमान है । देश की युवा पीढ़ी की उच्च शिक्षा में भागीदारी के संदर्भ में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका स्वतः महत्वपूर्ण हो जाती है ।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा केन्द्र का उद्देश्य हिन्दी भाषा के माध्यम से ज्ञान के नवीनतम अनुशासनों की शिक्षा समाज के हर तबके - विशेष तौर पर समाज के हाशिए पर रह रहे शिक्षा से वंचित लोगों - तक पहुँचाना है । केन्द्र अपनी स्थापना (15 जून, 2007) से ही अपने ध्येय *शिक्षा जन-जन के द्वार* के प्रति समर्पित है । वर्तमान में केन्द्र 10 पाठ्यक्रमों का संचालन कर रहा है । केन्द्र निरन्तर कार्यशालाओं का आयोजन कर पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में है । यह आशा की जा सकती है कि केन्द्र शीघ्र ही नवीन अन्तरानुशासनिक पाठ्यक्रमों का संचालन कर सकेगा । विश्वविद्यालय की अपनी स्थापना के विशिष्ट उद्देश्य के अनुरूप दूरस्थ शिक्षा केंद्र हिन्दी में मौलिक सोच एवं नवीन ज्ञानानुशासनों को आम जन तक हिन्दी भाषा के माध्यम से पहुँचाने को प्रतिबद्ध है । केंद्र विद्यार्थियों को निरन्तर गुणवत्तापूर्ण विद्यार्थी सहायता सेवाएँ - जिसमें काउंसलिंग, टीवी ब्रॉडकास्टिंग, रेडियो प्रसारण एवं परामर्श, टेली कॉन्फ्रेन्सिंग, व्यावहारिक प्रशिक्षण आदि शामिल हैं - प्रदान करने को प्रतिबद्ध है जो शिक्षा को सर्वांगीण तथा अद्यतन बनाए रखने के लिए ज़रूरी है । केंद्र सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) में होने वाले अद्यतन परिवर्तनों का प्रयोग शिक्षा को आम जन तक पहुँचाने में करता है । यह आशा की जा सकती है विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा केंद्र भविष्य में दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में एक श्रेष्ठ केंद्र के रूप में स्थापित होगा ।

प्रो. ए. अरविंदाक्षन

विश्वविद्‍यालय एक परिचय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्‍यालय, भारतीय संसद द्वारा पारित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्‍यालय अधिनियम, 1996 (1997 का अधिनियम संख्यांक 3) के अन्तर्गत स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय है । महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के लिए एक विकल्प उपस्थित करने का प्रयास है । विश्वविद्यालय की दृष्टि में यह वैकल्पिकता सक्रिय रूप में दिखाई पड़ती है । इसके शैक्षणिक ढाँचे में ही आवश्यकतानुसार लचीलेपन का सही समावेश लक्षित है । इन्हीं विशिष्ट कारणों से विश्वविद्यालय *महात्मा गांधी, अन्तरराष्ट्रीय* और *हिंदी* इन तीन बीज शब्दों से अपना नाम सार्थक करता है। विश्वविद्यालय के अधिनियम की धारा 4 में उल्लिखित विश्वविद्यालय के उद्देश्यों को निम्नांकित रूप से बताया गया है –

''विश्वविद्यालय का उद्देश्य साधारणतः हिन्दी भाषा तथा साहित्य का संवर्धन और विकास करना एवं उस प्रयोजन के लिए विद्या की सुसंगत शाखाओं में शिक्षण और अनुसंधान की सुविधाएँ प्रदान करना; हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में तुलनात्मक अध्ययनों एवं अनुसंधान के सक्रिय अनुसरण के लिए व्यवस्था करना; देश तथा विदेश में सुसंगत सूचना के विकास और प्रसारण के लिए सुविधाएँ प्रदान करना, हिन्दी की कार्यात्मक प्रभावशीलता में सुधार करने के लिए अनुवाद, निर्वचन और भाषा विज्ञान आदि जैसे क्षेत्रों में अनुसंधान, शिक्षा और प्रशिक्षण के कार्यक्रमों की व्यवस्था करना, विदेशों में हिन्दी में अभिरुचि रखनेवाले हिन्दी विद्वानों एवं समूहों तक पहुँचना एवं विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण तथा अनुसंधान के लिए उन्हें सहबद्ध करना और दूर शिक्षा पद्धति के माध्यम से हिन्दी को लोकप्रिय बनाना होगा ।''

साथ ही धारा 5 के उपबंध (5) के अन्तर्गत विश्वविद्यालय को प्रदत्त शक्तियों में यह बताया गया है कि ह्न

''दूर शिक्षा के माध्यम से उन व्यक्तियों को जिनके बारे में वह अवधारित करे, सुविधाएँ प्रदान करना।''

इसी पृष्ठभूमि के आलोक में 15 जून, 2007 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा केंद्र का उद्घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति एवं विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष महामहिम डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम द्वारा किया गया ।

विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा केंद्र का उद्देश्य हिंदी भाषा के माध्यम से ज्ञान के नवीनतम अनुशासनों की शिक्षा समाज के हर तबके-विशेष तौर पर समाज के हाशिए पर रह रहे शिक्षा से वंचित लोगों-तक पहुँचाना है । यह केंद्र हिंदी भाषा को आधार बनाकर प्रबंधन, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुवाद आदि अनुशासनों में शिक्षण, मौलिक सोच एवं लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु कटिबद्ध है । यह केंद्र स्त्री-अध्ययन, अहिंसा एवं शांति-अध्ययन जैसे नवीनतम अनुशासनों को व्यापक समाज तक पहुँचाने का प्रयास करेगा ताकि विश्वशांति एवं समता जैसे मूल्यों को व्यावहारिक तौर पर सिद्ध किया जा सके । हिंदी में मौलिक-वैकल्पिक सोच एवं शोध के लिए प्रतिबद्ध इस विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा केंद्र यह प्रयास करेगा कि एक ओर, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम शोध-अनुसंधान द्वारा हिंदी एवं ज्ञान के

अनुशासनों में मौलिक सृजन करे, साथ ही, दूसरी ओर हिंदी भाषा के माध्यम से रोज़गारोन्मुख पाठ्यक्रमों द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके । देश में उच्च शिक्षा के लगातार महँगे एवं आमजन की पहुँच से लगातार दूर होने के इस दौर में दूर शिक्षा की भूमिका निर्विवाद एवं महत्वपूर्ण है । अतः यह केंद्र उन सभी व्यक्तियों के लिए शिक्षा प्राप्ति का एक बेहतर अवसर प्रदान कर सकेगा जो किसी कारण शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके । आशा है कि इसी राह पर चलते हुए यह केंद्र अपने ध्येय *शिक्षा जन जन के द्वार* को चरितार्थ कर सकेगा ।

दर्शन :

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा केंद्र वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के लिए विकल्प उपस्थित करने, हिंदी में मौलिक सोच एवं अनुसंधान, समाज के हर तबके-विशेष तौर पर शिक्षा से वंचित तबकों - के लिए उच्च शिक्षा तक पहुँच आसान बनाने हेतु ज्ञान के नवीनतम अनुशासनों की हिंदी भाषा के माध्यम से मौलिक प्रस्तुति एवं नवीनतम तकनीकों का प्रयोग करते हुए दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का हिंदी माध्यम से प्रचार-प्रसार को सुनिश्चित करेगा ।

उद्देश्य :

१. परम्परागत व्यवस्था से लाभ उठाने से वंचित रहनेवालों को उच्च शिक्षा में बेहतरीन अवसर उपलब्ध कराना।
२. वृहत हिंदी-भाषी समुदाय के लिए उच्च शिक्षा में अत्याधुनिक, तकनीकी एवं विशिष्ट अनुशासनों के अवसरों में वृद्धि करना ।
३. हिंदी माध्यम से डिग्री प्राप्त करनेवाले इच्छुक अभ्यर्थी की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अधिकतम सुविधाएँ उपलब्ध कराना ।
४. नव-स्नातकों को पाठ्यक्रम की सफलतापूर्ण समाप्ति पर रोज़गार के नए एवं बेहतर अवसरों की ओर उन्मुख करने के लिए रोज़गारपरक पाठ्यक्रम उपलब्ध कराना ।
५. शिक्षा की इस पद्धति द्वारा हिंदी में वैकल्पिकता प्राप्त करने को बढ़ावा देना ।
६. विश्वविद्यालयों की वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था में बेहतर अन्तर्सम्बन्धता उपलब्ध कराने का सक्षम प्रयास करना ।

संचालित पाठ्यक्रम

(महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केंद्र के समस्त पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा परिषद डेक (DEC), नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त हैं)

१. एम. ए. ग्राम विकास

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को ग्राम विकास हेतु ग्रामोन्मुख करने वाला अध्ययन का अनूठा कार्यक्रम है । भारतीय संदर्भ में ग्राम विकास संबंधी विभिन्न पहलुओं से संबंधित गहन ज्ञान और सूचना उपलब्ध कराना इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य है । ग्राम विकास से संबंधित कारकों और मुद्दों की एकीकृत समझ उपलब्ध कराने के अलावा यह पाठ्यक्रम ग्राम विकास में अनुसंधान पद्धतियों से भी परिचित कराता है। ग्रामीण क्षेत्रों में अनुभव आधारित अनुसंधान पर लघु शोध-निबंध (dissertation) तैयार करना इस पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण घटक है । यह लघु शोध निबंध परियोजना कार्यक्रम **12** क्रेडिट का है। तथा प्रत्येक पाठ्यक्रम(लघुशोध निबंध के अलावा) में **66** क्रेडिट है ।

पाठ्यक्रम कोड	-	एमएआरडी
पात्रता	-	स्नातक उपाधि या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	2 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	5 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	4700/-
माध्यम	-	हिन्दी

पाठ्यक्रम विवरण

प्रथम वर्ष - अनिवार्य प्रश्नपत्र

एमआरडी	-	101	-	ग्राम विकास : भारतीय संदर्भ
एमआरडी	-	102	-	ग्राम विकास कार्यक्रम
एमआरडी	-	103	-	ग्राम विकास : योजना और प्रबंध
एमआरडी	-	004	-	ग्राम विकास में शोध पद्धतियाँ
एमआरडीपी	-	001	-	लघुशोध निबंध

द्वितीय वर्ष - वैकल्पिक पाठ्यक्रम (कोई पाँच प्रश्नपत्र चुनें)

आरडीडी	-	6	-	ग्रामीण स्वास्थ्य देखभाल
आरडीडी	-	7	-	ग्राम विकास में संचार और विस्तार
एमआरडीई	-	101	-	ग्रामीण सामाजिक विकास
एमआरडीई	-	002	-	ग्रामीण विकास और स्वैच्छिक कार्य
एमआरडीई	-	003	-	ग्रामीण विकास में भूमि सुधार
एमआरडीई	-	004	-	ग्रामीण विकास और उद्यमिता

२. एम. ए. हिन्दी :

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराता है । इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में रचनात्मक और आलोचनात्मक क्षमताओं एवं कौशलों का विकास करना है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य एवं भाषा की विस्तृत और ठोस जानकारी उपलब्ध कराता है, साथ ही साथ विद्यार्थी साहित्य के आस्वादन एवं विश्लेषण-मूल्यांकन की क्षमता का विकास भी कर सकेंगे । यह **64** क्रेडिट का है ।

पाठ्यक्रम कोड	-	एमएचडी
पात्रता	-	स्नातक उपाधि या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	2 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	5 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	5000/–
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

प्रथम वर्ष :

एमएचडी	- 02	- आधुनिक हिन्दी काव्य
एमएचडी	- 03	- उपन्यास और कहानी
एमएचडी	- 04	- नाटक और अन्य गद्य विधाएँ
एमएचडी	- 06	- हिन्दी साहित्य और भाषा का इतिहास

द्वितीय वर्ष :

एमएचडी	- 01	- हिन्दी काव्य
एमएचडी	- 05	- साहित्य सिद्धान्त और समालोचना
एमएचडी	- 07	- भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा
एमएचडी	- 13	- उपन्यास : स्वरूप और विकास
एमएचडी	- 14	- हिन्दी उपन्यास-I (प्रेमचंद का विशेष अध्ययन)
एमएचडी	- 15	- हिन्दी उपन्यास-II
एमएचडी	- 16	- भारतीय उपन्यास

३. एम. ए. समाजकार्य :

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को पेशेवर समाजकार्य में उच्च अध्ययन के अवसर उपलब्ध कराता है। समाजकार्य पाठ्यक्रम के परम्परागत विषयों को शामिल करते हुए यह वैश्वीकरण, विस्थापन, भारत में समाजकार्य का इतिहास, एड्स/एचआईवी इत्यादि समसामयिक व प्रासंगिक विषयों को भी समाहित करता है। इस पाठ्यक्रम का व्यावहारिक प्रशिक्षण विद्यार्थियों को रोजगार प्राप्ति की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। यह पाठ्यक्रम **66** क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम कोड	-	एमएसडब्ल्यू
पात्रता	-	स्नातक या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	2 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	5 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	13,100/-
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

प्रथम वर्ष :

एमएसडब्ल्यू	- 001	- समाजकार्य का उद्गम और विकास
एमएसडब्ल्यू	- 002	- भारत में समाजकार्य का उद्गम और विकास
एमएसडब्ल्यू	- 003	- सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए सामाजिक विज्ञान अवधारणाएँ
एमएसडब्ल्यू	- 004	- सामाजिक कार्य एवं सामाजिक विकास
एमएसडब्ल्यू	- 005	- समाजकार्य प्रैक्टिकम
एमएसडब्ल्यू	- 006	- समाजकार्य अनुसंधान
एमएसडब्ल्यूएल	- 001	- समाजकार्य व्यावहारिक प्रशिक्षण - I

द्वितीय वर्ष :

एमएसडब्ल्यू	- 007	- घटनाकार्य और परामर्श : व्यक्तियों के साथ काम
एमएसडब्ल्यू	- 008	- सामाजिक कार्य समूह : समूह के साथ काम
एमएसडब्ल्यू	- 009	- सामुदायिक विकास हेतु सामुदायिक संगठन प्रबंधन
एमएसडब्ल्यू	- 001	- एचआईवी/एड्स : रुढ़छवि, विभेद और रोकथाम
एमएसडब्ल्यू	- 002	- समाजकार्य व्यावहारिक प्रशिक्षण - II
एमएसडब्ल्यू	- 001	- लघुशोध प्रबंध (परियोजना कार्य)

४. पत्रकारिता (जनसंचार) में स्नातकोत्तर एम.जे.(एम.सी) :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जनसंचार सिद्धांतों, मीडिया की विभिन्न धारणाओं-समस्याओं का विस्तृत एवं गहन अध्ययन कराना है। इस पाठ्यक्रम के जरिए जनसंचार माध्यमों के संबंध में शोध प्रशिक्षण एवं सतत अध्ययन को गति देना, मीडिया के विभिन्न क्षेत्र में विशेष रूचि के अनुसार दक्षता पर जोर देना प्रमुख उद्देश्य रहा है। साथ ही विद्यार्थी को पत्रकारिता एवं जनसंचार के विभिन्न संस्थाओं में कार्य करने हेतु आवश्यक कौशल उपलब्ध कराने पर बल दिया गया है। यह पाठ्यक्रम **72** क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम कोड	-	एम.जे. (एम.सी.)
पात्रता	-	बैचलर ऑफ जर्नालिज्म एण्ड मास कम्यूनिकेशन बी. जे. (एम. सी.)/ बैचलर ऑफ जर्नालिज्म (बी. जे.)/ पी. जी. डिप्लोमा इन जर्नलिज्म *अथवा* समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	2 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	6 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	7700/-
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

प्रथम वर्ष :

एम.जे. (एम. सी.) - 01 - जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन
एम.जे. (एम. सी.) - 02 - फीचर लेखन एवं पत्रिका संपादन
एम.जे. (एम. सी.) - 03 - जनसंचार शोध प्रविधि
एम.जे. (एम. सी.) - 04 - जनसंचार के सिद्धांत

द्वितीय वर्ष :

एम.जे. (एम. सी.) - 06 - दृश्य-श्रव्य जनसंचार प्रविधि
एम.जे. (एम. सी.) - 11 - परियोजना कार्य (प्रोजेक्ट)

किन्हीं तीन पाठ्यक्रमों का चयन कीजिए :

एम.जे. (एम. सी.) - 05 - विश्व का समाचार जगत
एम.जे. (एम. सी.) - 07 - विकासात्मक जनसंचार
एम.जे. (एम. सी.) - 08 - ग्रामीण एवं पर्यावरण पत्रिका
एम.जे. (एम. सी.) - 09 - मुद्रण, प्रकाशन एवं जनसंचार प्रबंधन
एम.जे. (एम. सी.) - 10 - लघु शोध प्रबंध (प्रदत्त विषय पर)

(एम. जे. एम. सी. -10 उन विद्यार्थियों हेतु जिन्होंने बीजे एम.सी./बी. जे./पी. जी. डिप्लोमा इन जर्नलिज्म में 60% अथवा अधिक अंक प्राप्त किए है)

७. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम. लिब.) :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य देश में विद्यमान पुस्तकालय एवं सूचना केंद्रों के प्रभावी संगठन एवं प्रबंधन के लिए आवश्यक कौशल एवं प्रशिक्षण उपलब्ध करवाना है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विषय की नवीनतम प्रवृत्तियों एवं तकनीकी प्रशिक्षण से ज्ञान व कौशल अर्जित कर सकेगा। यह पाठ्यक्रम **32** क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम कोड	-	एमएलआईएस
पात्रता	-	पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक उपाधि (BLIS) न्यूनतम 50% अंकों के साथ *अथवा* पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक उपाधि (BLIS) के साथ मान्यता प्राप्त पुस्तकालय में दो वर्ष का कार्य करने का अनुभव
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	7900/-
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

एमएलआईएस	- 01 -	पुस्तकालय सूचना एवं समाज
एमएलआईएस	- 02 -	ज्ञान का संगठन एवं शोध पद्धति
एमएलआईएस	- 03 -	सूचना संग्रहण एवं पुनःप्राप्ति
एमएलआईएस	- **04** -	सूचना स्त्रोत, संसाधन एव प्रणालियाँ
एमएलआईएस	- 05 -	सूचना उत्पाद एवं सेवाएँ : संरचना, विकास एवं विपणन
एमएलआईएस	- 06 -	पुस्तकालय एवं सूचना प्रौद्योगिकी का प्रबंधन
एमएलआईएस	- 07 -	पुस्तकालय में सूचना प्रौद्योगिकी का अनुप्रयोग
एमएलआईएस	- 08 -	पुस्तकालय सामग्री का परिक्षण एवं संरक्षण

६. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में स्नातक (बी. लिब.) :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पुस्तकालय एवं सूचना तकनीक के प्रभावशाली संगठन एवं केंद्रों के प्रभावी संगठन एवं व्यवस्थापन की दक्षता एवं कौशल विकसित करते हुए नवीन सूचना तकनीक के अनुप्रयोग का ज्ञान प्रदान करना है। यह पाठ्यक्रम **40** क्रेडिट का होगा।

पाठ्यक्रम कोड	-	बीएलआईएस
पात्रता	-	50% अंकों के साथ स्नातक *अथवा* किसी भी विषय में स्नातकोत्तर *अथवा* स्नातक के साथ किसी भी पुस्तकालय एवं सूचना केंद्र में दो वर्ष कार्य करने का अनुभव *अथवा* स्नातक के साथ किसी भी पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में डिप्लोमा *अथवा* व्यावसायिक एवं तकनीकी कार्यक्रमों में स्नातक डिग्री (इंजीनियरिंग, मेडीसिन, कानून, फार्मेसी आदि)
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	7400/-
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

बीएलआईएस	- 01	-	पुस्तकालय एवं समाज
बीएलआईएस	- 02	-	पुस्तकालय वर्गीकरण एवं सूचीकरण सिद्धांत
बीएलआईएस	- 03	-	पुस्तकालय वर्गीकरण - प्रायोगिक
बीएलआईएस	- 04	-	पुस्तकालय सूचीकरण - प्रायोगिक
बीएलआईएस	- 05	-	पुस्तकालय प्रबंध
बीएलआईएस	- 06	-	सूचना स्त्रोत
बीएलआईएस	- 07	-	संदर्भ एवं सूचना सेवाएँ
बीएलआईएस	- 08	-	कम्प्यूटर : आधार एवं अनुप्रयोग

७. पत्रकारिता (जनसंचार) में स्नातक (बीजेएमसी) :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय का व्यावहारिक एवं गहन प्रशिक्षण देना है। यह पाठ्यक्रम पत्रकारिता एवं जनसंचार माध्यमों के प्रति रूचि उत्पन्न करता है ताकि विद्यार्थी मुद्रित माध्यमों तथा पत्र-पत्रिकाओं आदि से लेकर रेडियो, टेलीविजन, समाचार एजेंसियों तथा सरकारी एवं कारपोरेट संस्थाओं में रोजगार प्राप्त करने का कौशल प्राप्त कर सके। यह पाठ्यक्रम **40** क्रेडिट का होगा ।

पाठ्यक्रम कोड	-	बीजेएमसी
पात्रता	-	स्नातक या समकक्ष उपाधि
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	8400/-
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

बीजे	- 01	-	कम्प्यूटर एप्लीकेशन एवं साइबर मीडिया
बीजे	- 02	-	संचार एवं विकासात्मक संचार
बीजे	- 03	-	जनसंचार माध्यमों का इतिहास
बीजे	- 04	-	मीडिया लेखन
बीजे	- 05	-	जनसम्पर्क एवं विज्ञापन
बीजे	- 06	-	संपादन, पृष्ठ सज्जा एवं मुद्रण
बीजे	- 07	-	मीडिया संस्थान प्रबंधन एवं मीडिया कानून
बीजे	- 08	-	व्यावहारिक कार्य/परियोजना

८. अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा :

अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा का उद्देश्य विद्यार्थियों में वह कौशल निर्माण करना है जिससे वह हिंदी से अंग्रेज़ी या अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करने में सक्षम हो सके। इस पाठ्यक्रम का निर्माण सामाजिक-सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में अनुवाद की आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया गया है। इस डिप्लोमा के अंतर्गत हिंदी से अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद का प्रशिक्षण दिया जाता है। अतएव विद्यार्थी से यह आशा की जाती है कि वे दोनों भाषाओं में कार्यसाधक ज्ञान रखते हों। यह पाठ्यक्रम **30** क्रेडिट का है। एक प्रश्न-पत्र के समकक्ष विद्यार्थियों को अनुवार परियोजना पूर्ण करनी है।

पाठ्यक्रम कोड	-	पीजीडीटी
पात्रता	-	स्नातक उपाधि या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	3500/-
माध्यम	-	हिन्दी

पाठ्यक्रम विवरण

पीजीडीटी	-	01	-	अनुवाद : सिद्धान्त और प्रविधि
पीजीडीटी	-	02	-	अनुवाद का सामाजिक और भाषिक पक्ष
पीजीडीटी	-	03	-	व्यावहारिक अनुवाद के विविध स्तर और क्षेत्र
पीजीडीटी	-	04	-	प्रशासनिक अनुवाद
पीजीडीटी	-	05	-	अनुवाद परियोजना

१. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया प्रबंधन एवं फिल्म प्रोडक्शन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा :

पाठ्यक्रम कोड	-	पीजीडीइएम एण्ड एफपी
पात्रता	-	स्नातक उपाधि या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	3 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	6200/–
माध्यम	-	हिन्दी

पाठ्यक्रम विवरण

पीजीडीईएम एण्ड एफपी	-	01	-	मीडिया : अवधारणा एवं सिद्धांत
पीजीडीईएम एण्ड एफपी	-	02	-	फिल्म : परिचय, सिद्धांत एवं इतिहास
पीजीडीईएम एण्ड एफपी	-	03	-	फिल्म प्रोडक्शन
पीजीडीईएम एण्ड एफपी	-	04	-	फिल्म प्रबंधन
पीजीडीईएम एण्ड एफपी	-	05	-	प्रायोगिक एवं प्रोजेक्ट कार्य

१०. आपदा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा :

आपदा प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा का उद्देश्य विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन, आपदा न्यूनीकरण और पुनर्वास की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराना है। जिससे वह जोखिम मूल्यांकन व आपदा संबंधी विश्लेषण कर सके। इस डिप्लोमा के माध्यम से जागरूकता बढ़ाने तथा आपदा प्रबंधन में सामुदायिक सक्रियता एवं भागीदारी के लिए आवश्यक संस्थागत ढाँचे को मजबूत बनाने का उद्देश्य भी है। इस पाठ्यक्रम में सरकारी, गैर-सरकारी क्षेत्र में कार्य करने वाले समूहों की आवश्यकता को ध्यान में रखा गया है। यह पाठ्यक्रम **32** क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम कोड	-	पीजीडीडीएम
पात्रता	-	स्नातक उपाधि या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	5500/-
माध्यम	-	हिन्दी

पाठ्यक्रम विवरण

एमपीए	-	001	-	प्राकृतिक आपदाओं को समझना
एमपीए	-	002	-	मानव निर्मित आपदाओं को समझना
एमपीए	-	003	-	जोखिम आकलन और संवेदनशीलता/विश्लेषण
एमपीए	-	004	-	आपदा तैयारी
एमपीए	-	005	-	आपदा प्रतिक्रिया
एमपीए	-	006	-	आपदा चिकित्सा
एमपीए	-	007	-	पुनर्वास, पुनर्निर्माण एवं पुनरूत्थान
एमपीएपी	-	001	-	परियोजना कार्य

११. पत्रकारिता एवं जन-संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा :

पत्रकारिता एवं जन-संचार में स्नातकोत्तर डिप्लोमा का उद्देश्य मीडिया क्षेत्र में कार्यरत लोगों तथा उनके व्यावसायिक विकास से जुड़े ज्ञान व कौशल में वृद्धि करना है। यह डिप्लोमा जन-संचार एवं पत्रकारिता के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक आयामों को सर्वांगीण दृष्टि प्रदान करता है। इस डिप्लोमा के लिए पटकथा लेखक, रिपोर्टर, संपादक, फोटोग्राफर, तकनीकी सहायक, जनसंपर्क अधिकारी आदि के अनुभव स्वीकार्य होगे। यह पाठ्यक्रम **32** क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम कोड	-	पीजीडीजेएमसी
पात्रता	-	स्नातक उपाधि या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	3300/-
माध्यम	-	हिन्दी

पाठ्यक्रम विवरण

जेएमसी	-	01	-	जनसंचार एवं पत्रकारिता : स्वरूप और सिद्धांत
जेएमसी	-	02	-	मीडिया और समाज
जेएमसी	-	03	-	समाचार-संकलन, लेखन एवं सम्पादन
जेएमसी	-	04	-	जनसम्पर्क एवं विज्ञापन

१२. ग्राम विकास में स्नातकोत्तर डिप्लोमा :

यह पाठ्यक्रम ग्रामीण जीवन के विविध पहलुओं से युक्त ग्राम विकास की एकीकृत जानकारी प्रदान करता है। यह विद्यार्थियों को शोध और परियोजना कार्य के आधारभूत पहलुओं से परिचित कराता है। यह संबंधित कौशल अर्जित करने में सहायता प्रदान करता है। यह पाठ्यक्रम **30** क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम कोड	-	पीजीडीआरडी
पात्रता	-	स्नातक उपाधि या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	3500/–
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

एमआरडी	-	101	-	ग्राम विकास : भारतीय संदर्भ
एमआरडी	-	102	-	ग्राम विकास कार्यक्रम
एमआरडी	-	103	-	ग्राम विकास : योजना और प्रबंध
एमआरडीई	-	101	-	ग्रामीण सामाजिक विकास
आरडीडी	-	05	-	शोध और परियोजना कार्य

१३. हिंदी में सृजनात्मक लेखन में डिप्लोमा :

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को लेखन कला की समझ प्रदान करते हुए उसकी सृजनात्मक क्षमता का विकास करता है। साथ ही व्यावसायिक लेखन या स्वतंत्र लेखन में रूचि रखने वाले लोगों को हिंदी में सृजनात्मक लेखन की बारीकियाँ बताता है। पाठ्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को उनकी रचनाएँ प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यह पाठ्यक्रम **24** क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम कोड	-	डीसीडब्ल्यूएच
पात्रता	-	10+2 या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	3000/-
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

डीसीएच-	01 -	सृजनात्मक लेखन के सिद्धांत
डीसीएच-	02 -	फीचर लेखन
डीसीएच-	03 -	गद्य साहित्य लेखन
डीसीएच-	04 -	रेडियो के लिए लेखन
डीसीएच-	05 -	विभिन्न सामाजिक वर्ग और लेखन
डीसीएच-	06 -	काव्य लेखन

१४. स्त्री सशक्तिकरण एवं विकास में डिप्लोमा :

अंतरानुशासनिक शिक्षण-पद्धति के तहत इस नए प्रकार के पाठ्यक्रम का उद्देश्य भारतीय समाज में स्त्री को मात्र एक खाँचे में स्थित कर देखना नहीं है, बल्कि एक ऐसी दृष्टि विकसित करना है जो पूरे समाज में चल रही गतिविधियों को स्त्री के माध्यम से पुनर्व्याख्यायित कर सके और विद्यार्थियों को आगे इस दिशा में कार्यरत सरकारी, गैर-सरकारी संगठनों के साथ जोड़ सकें। यह पाठ्यक्रम **32** क्रेडिट का है।

पाठ्यक्रम कोड	-	डीडब्ल्यूईडी
पात्रता	-	10+2 या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	4 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	4500/-
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

बीडब्ल्यूईएफ	-	002	-	जेंडर प्रशिक्षण नजरिया
डब्ल्यूईईडी	-	004	-	स्त्री सशक्तिकरण के लिए रणनीतियाँ
डब्ल्यूईडी	-	005	-	स्त्री और विकास
बीडब्ल्यूईएफ	-	006	-	संगठन और नेतृत्व
बीडब्ल्यूईएफ	-	007	-	कार्य और उद्यमशीलता
बीडब्ल्यूईएफ	-	008	-	ऋण और वित्त
डब्ल्यूईडी	-	012	-	स्त्री और समाज : वैश्विक संदर्भ में स्थानीय मुद्दे

१७. पर्यटन अध्ययन में डिप्लोमा :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य संस्कृति एवं पर्यटन के क्षेत्र में रोजगार अवसरों को सृजित करना है। विद्यार्थी इसके जरिए पर्यटन, इतिहास, कला एवं संस्कृति के विविध स्तरों की बुनियादी जानकारी प्राप्त कर सकेगा। इस डिप्लोमा के जरिए भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं पर्यटन के विषय में चेतना सृजित हो पाएगी। यह पाठ्यक्रम कुल **36** क्रेडिट का है। विद्यार्थियों को चार क्रेडिट के समकक्ष एक पर्यटन परियोजना पूर्ण करनी है।

पाठ्यक्रम कोड	-	डीटीएस
पात्रता	-	10+2 या समकक्ष
आयु	-	कोई सीमा नहीं
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि	-	1 वर्ष
पाठ्यक्रम उत्तीर्ण करने की अधिकतम अवधि	-	3 वर्ष
पाठ्यक्रम शुल्क	-	4800/-
माध्यम	-	हिंदी

पाठ्यक्रम विवरण

डीटीएस	-	01	-	पर्यटन में आधार पाठ्यक्रम
डीटीएस	-	02	-	पर्यटन विकास : उत्पादन, संचालन और स्थिति अध्ययन
डीटीएस	-	03	-	पर्यटन में प्रबंधन
डीटीएस	-	04	-	भारतीय संस्कृति : पर्यटन परिदृष्टि
पीटीएस	-	05	-	पर्यटन परियोजना

सामान्य जानकारी

प्रवेश :

- जिन विद्यार्थियों का निर्धारित तिथि तक शुल्क जमा होगा, उन्हें ही केंद्र का विद्यार्थी माना जाएगा ।
- निर्धारित तिथि के पश्चात प्राप्त आवेदन प्रपत्र एवं शुल्क पर विचार नहीं किया जाएगा । निर्धारित शुल्क से अधिक राशि प्राप्त होने पर उसे लौटाने की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय की नहीं होगी।
- विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे आवेदन पत्र को सावधानीपूर्वक पूरी तरह से भरकर, आवश्यक दस्तावेज़ों के साथ संलग्न करके भेजें । स्वप्रमाणित (Self attested) अंकतालिकाओं, प्रमाण पत्रों एवं अनुभव पत्रों (यदि हों तो) को संलग्न करें ।
- अधूरे/अंतिम तिथि के बाद आने वाले आवेदन पत्रों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा ।
- आवेदन पत्र के साथ पाठ्यक्रम शुल्क की राशि का मांग पत्र आवश्यक रुप से संलग्न करें। इस सम्बन्ध में मांग पत्र के खो जाने/वापस करने की जिम्मेदारी केंद्र की नहीं होगी।
- लिफाफे पर आवेदित पाठ्यक्रम का उल्लेख अवश्य करें। पूर्ण रूप से भरे हुए आवेदन पत्र आवश्यक दस्तावेज के साथ निर्धारित तिथि तक निम्नलिखित पते पर पहुँच जाने चाहिए :

सहायक कुलसचिव, महात्मा गांधी दूरस्थ शिक्षा केंद्र
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट - मानस मंदिर, गांधी हिल,
वर्धा - **442 001** (महाराष्ट्र)

संलग्नकों की सूची :

आवेदन पत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज़ों की स्वप्रमाणित प्रतिलिपियाँ संलग्न होना अनिवार्य है :

१. कक्षा 10 की अंकसूची/प्रमाणपत्र
२. कक्षा 12 की अंकसूची/प्रमाणपत्र
३. स्नातक की अंकसूची एवं प्रमाणपत्र/डिग्री/अनन्तिम प्रमाणपत्र
४. अनुभव/सेवा प्रमाणपत्र
५. स्वयं का पता लिखे दो लिफाफे जिन पर पांच रुपये के डाकटिकट लगे हों

पात्रता एवं प्रवेश :

१. प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्रों की निश्चित संख्या या लक्षित समूह की संख्या के निर्धारण का अधिकार विश्वविद्यालय के पास सुरक्षित होगा । साथ ही यह संख्या पाठ्यक्रम की मांग व संचालित करने की क्षमता पर भी निर्भर होगा ।
२. लक्षित समूह में नव-स्नातक विद्यार्थी, नौकरीपेशा अभ्यर्थी इत्यादि शामिल हैं ।
३. प्रवेश अर्हता के आधार पर ही होगा जैसा कि विवरणिका में निर्देशित है ।
४. नामांकन के लिए प्रवेश-परीक्षा नहीं ली जाएगी ।
५. सभी पाठ्यक्रमों का माध्यम हिंदी होगा ।
६. पाठ्यक्रम में चयन का मानदंड योग्यता पिछला अकादमिक रिकॉर्ड, पेशेवर अनुभव इत्यादि होगा ।
७. स्नातक परीक्षा परिणाम प्रतीक्षारत विद्यार्थी भी आवेदन कर सकते है।

निर्देश :

१. अपना, माता पिता का नाम हिंदी व अंग्रेज़ी में सावधानीपूर्वक एवं सुस्पष्ट लिखें। विद्यार्थी की अंकतालिका एवं अन्य दस्तावेजों में यही नाम अंतिम किया जाएगा।
२. आवेदन सुस्पष्ट एवं पठनीय रूप से भरें।
३. आवेदक आवेदन में फोन नं. ईमेल, फैक्स (संभव हो तो) अनिवार्य रूप से उल्लेख करें।
४. पत्राचार पता का सावधानीपूर्वक उल्लेख करें। विद्यार्थी को समस्त सामग्री इस पत्राचार के पते पर प्रेषित की जाएगी।
५. पते में जिला व राज्य का उल्लेख अनिवार्य रूप से करें।
६. मांग पत्र के पीछे आवेदक अपना नाम, पाठ्यक्रम का नाम व कोड, अपना पता अवश्य लिखें।

चयन सूचना :

पाठ्यक्रमों के लिए चयनित विद्यार्थियों को डाक द्वारा सूचित किया जाएगा । चयनित विद्यार्थियों की सूची विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा केंद्र के कार्यालय के सूचना पट्ट एवं विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.hindivishwa.org पर दी जाएगी । विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा कार्यालय द्वारा दिए सम्पर्क नम्बर द्वारा भी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं ।

नामांकन :

पाठ्यक्रम शुल्क जमा कराने के बाद ही विद्यार्थी को नामांकन संख्या प्रदान की जाएगी, जो उनके परिचय-पत्र पर भी अंकित की जाएगी । यह नामांकन संख्या पाठ्यक्रम पूरे करने की अवधि तक ही मान्य होगी ।

परिचय-पत्र :

पाठ्यक्रम शुल्क जमा होने के बाद विद्यार्थी को परिचय-पत्र जारी किया जाएगा । इस परिचय-पत्र में विद्यार्थी का नाम, पाठ्यक्रम का नाम, नामांकन संख्या आदि का उल्लेख किया जाएगा । किसी भी पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने की न्यूनतम अवधि के दौरान पाठ्यक्रम पूरा नहीं करने पर परिचय पत्र निर्धारित शुल्क देकर पुनः बनवाना अनिवार्य है। इसके लिए रु. 50/- के मांग पत्र को जमा कराना होगा । यह मांग पत्र निदेशक, दूरस्थ शिक्षा, म. गां. अं. हि. वि. वि., वर्धा के पक्ष में वर्धा में देय हो ।

पाठ्यक्रम सत्र :

दूरस्थ शिक्षा केंद्र वार्षिक आधार पर पाठ्यक्रम संचालित करेगा । हर विद्यार्थी को प्रदत्त अधिकतम अवधि के भीतर संचालित पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करना होगा । इस अवधि में नामांकित होने वाले वर्ष की भी गणना की जाएगी ।

पाठ्य सामग्री :

विद्यार्थियों को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली एवं राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद तथा वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की उच्चस्तरीय एवं गुणवत्तापूर्ण पाठ्यसामग्री प्रदान की जाएगी ।

शुल्क सारणी :

दूरस्थ शिक्षा केंद्र के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों में चयनित विद्यार्थियों को निर्धारित शुल्क प्रवेश के समय एकमुश्त जमा कराना अनिवार्य होगा । पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित पाठ्यक्रम शुल्क प्रवेश आवेदन प्रत्र के साथ अनिवार्य रुप से संलग्न करना होगा ।

क्र. सं.	पाठ्यक्रम कोड	शिक्षण शुल्क	प्रवेश शुल्क	नामांकन शुल्क	परिचय पत्र	परीक्षा शुल्क	कुल
१.	एमएआरडी	3700 (प्रथम वर्ष)	200	200	100	500	4700/-
		3600 (द्वितीय वर्ष)	200	200	100	500	4600/-
२.	एमएचडी	4000 (प्रथम वर्ष)	200	200	100	500	5000/-
		4000 (द्वितीय वर्ष)	200	200	100	500	5000/-
३.	एमएसडब्ल्यू	12100 (प्रथम वर्ष)	200	200	100	500	13100/-
		12000 (द्वितीय वर्ष)	200	200	100	500	13000/-
४.	एमजेएमसी	6700 (प्रथम वर्ष)	200	200	100	500	7700/-
		6600 (द्वितीय वर्ष)	200	200	100	850	7950/-
५.	एमएलआईएस	6100	200	200	100	1300	7900/-
६.	बीएलआईएस	6000	200	200	100	900	7400/-
७.	बीजेएमसी	7100	200	200	100	800	8400/-
८.	पीजीडीईएमपीएण्ड एफ पी	5200	200	200	100	500	6200/-
९.	पीजीडीडीएम	4500	200	200	100	500	5500/-
१०.	पीजीडीटी	2500	200	200	100	500	3500/-
११.	पीजीडीजेएमसी	2300	200	200	100	500	3300/-
१२.	पीजीडीआरडी	2500	200	200	100	500	3500/-
१३.	डीसीडब्ल्यूएच	2000	200	200	100	500	3000/-
१४.	डीडब्ल्यूईडी	3500	200	200	100	500	4500/-
१५.	डीटीएस	3800	200	200	100	500	4800/-

भुगतान प्रक्रिया :

समस्त भुगतान मांग पत्र (डिमांड ड्राफ्ट) के रूप में ही स्वीकार किए जाएँगे। किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा जारी मांग पत्र निदेशक, दूरस्थ शिक्षा केंद्र, म. गां. अं. हि. वि. वि., वर्धा के पक्ष में वर्धा में देय हो। अन्य किसी भी तरीके से भुगतान उदाहरण-चेक, पोस्टल ऑर्डर, मनीऑर्डर, नगद आदि स्वीकार नहीं किए जाएँगे। प्रेषित मांगपत्र के पीछे विद्यार्थी अपना नाम, पाठ्यक्रम का नाम, राशि का उल्लेख जरूर करें। एक बार जमा होने वाला शुल्क किसी भी स्थिति में वापस नहीं होगा।

प्रवेश-आरक्षण :

भारत सरकार के नियमानुसार अनुसूचित जाति/जनजाति, विकलांग विद्यार्थियों को आरक्षण दिया जाएगा।

छात्रवृत्ति और शिक्षण शुल्क का पुनर्भुगतान :

अन्य विद्यार्थियों के समान आरक्षित वर्ग में आनेवाले विद्यार्थियों एवं शारीरिक चुनौती प्राप्त विद्यार्थी भी भारत सरकार की छात्रवृत्ति के पात्र होंगे। शारीरिक चुनौती प्राप्त विद्यार्थी को छात्रवृत्ति हेतु तथा आरक्षित वर्ग में आनेवाले विद्यार्थियों को शिक्षण शुल्क के पुनर्भुगतान हेतु आवेदन सम्बन्धित राज्य सरकार के समाज कल्याण विभाग से प्राप्त कर पूर्ण रूप से भरे हुए आवेदन निदेशक, दूरस्थ शिक्षा केंद्र, म. गां. अं. हि. वि. वि., वर्धा के माध्यम से जमा कराने होंगे।

मूल्यांकन एवं परिणाम :

दूरस्थ शिक्षा केन्द्र निम्नलिखित आधारों पर मूल्यांकन करता है -

१. सत्रीय कार्य (असाइनमेंट)/संपर्क कक्षाएँ

२. परियोजना कार्य

३. सत्रांत परीक्षा

दूरस्थ शिक्षा केंद्र विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु आंतरिक एवं सत्रांत मूल्यांकन पद्धति को

अपनाता है । इसमें कुल पूर्णांकों में से 30% आंतरिक मूल्यांकन/सम्पर्क कक्षाओं का तथा शेष 70% सत्रांत मूल्यांकन का होगा । सत्रांत मूल्यांकन में उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक प्रश्नपत्र में कम से कम 40% अंक लाना अनिवार्य है । जो विद्यार्थी दोनों पूर्णांकों (100%) में से 40% प्राप्तांक लाएगा, वही उत्तीर्ण माना जाएगा । जो विद्यार्थी 40% प्राप्तांक लाने में असफल रहेंगे, उन्हें अगली सत्रांत परीक्षा में बैठने के लिए निर्धारित शुल्क रु. 300/- जमा कराना होगा । सत्रीय कार्य में उत्तीर्ण नहीं होने पर अगले सत्र में सत्रीय कार्य पुनः जमा कराने हेतु निर्धारित शुल्क रु. 200/- जमा कराना अनिवार्य होगा ।

ग्रेडिंग/श्रेणी :

उत्तीर्ण विद्यार्थियों को निम्नांकित आधारों पर ग्रेडिंग/श्रेणी प्रदान की जाएगी –

प्रथम श्रेणी (विशिष्टता के साथ) 75% तथा अधिक

प्रथम श्रेणी 60% या अधिक परन्तु 75% से कम

द्वितीय श्रेणी 50% या अधिक परन्तु 60% से कम

तृतीय श्रेणी 40% या अधिक परन्तु 50% से कम

पुनर्गणना :

पुनर्गणना का अर्थ सत्रांत उत्तर पुस्तिकाओं में दिए गए अंकों की पुनर्गणना है । इसमें यह भी देखा जाएगा कि कोई भाग अंक देने से छूट तो नहीं गया है । परिणाम घोषित होने के 30 दिन के भीतर इस सम्बन्ध में आवेदन पत्र जमा करवाना होगा तथा हर प्रश्न पत्र के लिए रु. 200/– राशि का मांग पत्र आवेदन पत्र के साथ देना होगा । इस सम्बन्ध में परिणाम घोषित करने की अवधि विश्वविद्यालय निश्चित कर सार्वजनिक करेगा। साधारणतः यह अवधि पुनर्गणना हेतु आवेदन करने की अंतिम तिथि से एक माह हो सकती है । अगर पुनर्गणना में कोई तब्दीली होती है तो विश्वविद्यालय अधिक अंक को ही मान्यता देगा । नयी अंक सूची बिना किसी शुल्क के विद्यार्थी को प्रदान की जाएगी । उत्तर पुस्तिकाओं की पुनर्जांच एवं निश्चित सत्रीय कार्यों की पुनर्जांच का कोई प्रावधान नहीं होगा ।

डिप्लोमा/डिग्री प्रमाणपत्र :

पाठ्यक्रम की समस्त ज़िम्मेदारियों के पूरे होने पर ही डिप्लोमा/डिग्री प्रमाणपत्र जारी किया जाएगा । इस हेतु निर्धारित शुल्क निम्नानुसार है –

उपाधि	रु.
डिप्लोमा	150/-
पीजी डिप्लोमा	200/-
डिग्री	250/-

इस राशि का मांग पत्र निदेशक, दूरस्थ शिक्षा म.गां.अं.हि.वि.वि., वर्धा के पक्ष में वर्धा में देय हो, यह मांग पत्र किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक से जारी किया हुआ होना चाहिए ।

डिप्लोमा/डिग्री की प्रतिलिपि :

प्रत्येक प्रमाणपत्र एवं अंकसूची की प्रतिलिपि प्राप्त करने हेतु आवेदन आवश्यक पुलिस दस्तावेज़ों (एफआईआर की प्रतिलिपि) सहित रु. 200/- राशि के मांग पत्र के साथ निदेशक, दूरस्थ शिक्षा केंद्र, म.गां.अं.हि.वि.वि., वर्धा को भेजें । यह मांग पत्र निदेशक, दूरस्थ शिक्षा, म.गां.अं.हि.वि.वि., वर्धा के पक्ष में वर्धा में देय होगा । यह मांग पत्र किसी भी राष्ट्रीयकृत बैंक से जारी किया हुआ होना चाहिए ।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित नियमित पाठ्यक्रम

महात्मा गांधी, हिन्दी और *अंतरराष्ट्रीय* ये तीन बीज शब्द महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रमुख कार्यक्षेत्र रहे हैं । उन्हें ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय में चार विद्यापीठों की स्थापना की गई है :

१. भाषा विद्यापीठ
२. संस्कृति विद्यापीठ
३. साहित्य विद्यापीठ
४. अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ

इन चारों विद्यापीठों के माध्यम से निम्नलिखित पाठ्यक्रम चलाएँ जा रहे हैं –

एम. ए. (२ वर्ष) :

१. हिन्दी (भाषा-प्रौद्योगिकी)
२. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)
३. हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)
४. अहिंसा एवं शांति-अध्ययन
५. स्त्री-अध्ययन
६. जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण
७. दलित एवं जनजाति अध्ययन
८. कम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स
९. नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन
१०. मास्टर ऑफ इन्फॉरमेटिक्स ऐंड लैंग्वेज इन्जीनियरिंग (एम. आई. एल. ई.)
११. मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम. एस. डब्ल्यू.)

एम. फिल. (१ वर्ष) :

१. हिन्दी (भाषा-प्रौद्योगिकी)
२. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)
३. हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)
४. अहिंसा एवं शांति-अध्ययन
५. स्त्री-अध्ययन
६. जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण

पीएच. डी. :

१. हिन्दी (भाषा-प्रौद्योगिकी)
२. हिन्दी (तुलनात्मक साहित्य)
३. हिन्दी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)
४. अहिंसा एवं शांति-अध्ययन
५. स्त्री-अध्ययन
६. जनसंचार माध्यम एवं सम्प्रेषण
७. पीएच. डी. (इन्फॉरमेटिक्स ऐंड लैंग्वेज इन्जीनियरिंग)

चीनी, स्पैनिश एवं फ्रेंच में डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी संचालित हैं । अधिक जानकारी के लिए विश्वविद्यालय की वेबसाइट www.hindivishwa.org देखें ।

विभागीय आयोजन

कार्यशाला

१. दलित अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम कार्यशाला का आयोजन ०१-०२ अप्रैल, २००९

२. स्त्री अध्ययन में एम.ए. पाठ्यक्रम कार्यशाला का आयोजन १५-१६ अप्रैल, २००९

३. हिन्दी एम.ए. पाठ्यक्रम कार्यशाला का आयोजन २७-२८ अप्रैल, २००९

४. अहिंसा एवं शांति अध्ययन एम.ए. पाठ्यक्रम कार्यशाला का आयोजन ०६-०७ नवंबर, २००९

५. शांति एवं संघर्ष प्रबंधन एम.ए. पाठ्यक्रम कार्यशाला का आयोजन ०६-०७ नवंबर, २००९

६.	जनजातीय अध्ययन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यशाला का आयोजन १२-१३ अक्टूबर, २००१

संगोष्ठी

1. 31 जुलाई, 2007 को प्रेमचंद जयंती का आयोजन दूर शिक्षा केन्द्र एवं साहित्य विद्यापीठ द्वारा विश्वविद्यालय के जाजूवाड़ी परिसर में संपन्न किया गया ।

२. ४-५ अप्रैल, २००८ को १८५७ और हिन्दी नवजागरण विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन अहिंसा एवं शान्ति-अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी-फुजीई गुरुजी शांति अध्ययन केन्द्र एवं दूर शिक्षा केन्द्र व्दारा किया गया । इसके अन्तर्गत प्रस्तुत विषय पर कविता-पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर में किया गया ।

३. २७ एवं २८ मार्च, २००९ को भारत में दूर शिक्षा : चुनौतियाँ और संभावनाएँ विषय पर विश्वविद्यालय के जाजूवाड़ी परिसर में दूर शिक्षा केन्द्र व दूरस्थ शिक्षा परिषद, दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया । इस संगोष्ठी में दूर शिक्षा से जुड़े विद्धानों ने *मुक्त विश्वविद्यालय-मिथक और यथार्थ, भूमंडलीकरण और दूरशिक्षा, दूरशिक्षा और मल्टीमीडिया, नई शिक्षा नीति और दूरशिक्षा की भूमिका* विषय पर गहनता से विचार-विमर्श किया । संगोष्ठी में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. वी. रा. जगन्नाथन, प्रो. सत्यकाम, आंध्रप्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद के प्रो. एम. एस. हयात, मगध विश्वविद्यालय (बिहार) के डॉ. कमलानन्द झा, राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के प्रो. बी. एन. सिंह तथा विश्वविद्यालय के अकादमिक सदस्यगण, छात्र-छात्राओं ने प्रमुखता से उपस्थित होकर दूर-शिक्षा की चुनौतियों व संभावनाओं पर चर्चा की ।

४. २६ जून २०१० को दूरस्थ शिक्षा का वर्तमान विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विषय विशेषज्ञ के रुप में इग्नू नई दिल्ली के प्रो. जे.एम. पारख एवं डेक नई दिल्ली के उप निदेशक डा. भारत भूषण उपस्थित रहे।